तित्थयर

जैन भवन

४६०

वर्ष : २३ अंक : ९
दिसम्बर १९९९

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन

कलकत्ता

वर्ष - २३ अंक - ९, दिसम्बर १९९९

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख		लेखक	पृ. सं.
	धातुमय जैन प्रतिमाएँ	-	श्री भँवरलाल नाहटा	६९
	भ० महावीर स्वामी का निर्वाण एवं प्रकाश पर्व दीपावली	-	उपा० मुनिश्री कामकुमार नन्दी जी महाराज	७८
	जैन धर्म में पुण्य और पाप तत्व	-	डा० मुकुलराज मेहता	८२
	मलया सुन्दरी चरित्र	-	-	८८

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Aupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

जैसे किंपाक फल का परिणाम अच्छा नहीं होता।
उसी प्रकार भोगों का परिणाम अच्छा नहीं होता।

सरल स्वभाव वाले को ही शुद्धता प्राप्त होती हैं और शुद्ध पुरुष के हृदय में ही धर्म ठहरता है, वह उत्कृष्ट निर्वाण प्राप्त करता है।

धातुमय जैन प्रतिमाएं

श्री भंवरलाल नाहटा

पुर्वानुवृत्ति

३. **चतुर्विंशति पट्ट** - छत्र के नीचे विराजित मूल नायक प्रतिमा के उभय पक्ष में खड़े धोती पहने काउसग्गिओं के ऊपर पद्मासन मुद्रा में जिनेश्वर और नीचे की ओर यक्ष यक्षी हैं। पायेदार सिंहासन के मध्य लटकते वस्त्र के दोनों ओर सिंह और तोरण के स्तंभ में चार - चार जिन प्रतिमाएँ और ऊपर के कक्ष में तोरण के ऊपर व दोनों ओर एक पद्मासन और दो - दो खड्गासन मुद्रा की प्रतिमाएँ हैं। तीन कक्षों के मध्य में एक - एक पद्मासन मुद्रा की प्रतिमा है। प्रतिमा के उभय पक्ष में अलंकृत स्तंभ और मकर मुख प्रतीत होते है। सं. ११३६ में जल्लिका श्राविका द्वारा निर्माणित है।

४. **पार्श्वनाथ पंचतीर्थी** - यह प्रतिमा सं ११६० में कुर्चपुर गच्छीय मनोरथाचार्य द्वारा प्रतिष्ठित है। सप्त फर्ण मंडित पार्श्वनाथ के बगल में खड़े धोती पहने खड्गासन प्रतिमाओं के ऊपर पद्मासन प्रतिमाएँ है, सिंहासन के चारों पायों के बीच दोनों सिंह बैठे है और उभय पक्ष में चामर धारी खड़े हैं।

५. **आदिनाथ पंचतीर्थी** - यह प्रतिमा सं. १०६३ में प्रतिष्ठित है और कला युक्त है। भगवान की प्रतिमा के उभय पक्ष में खड्गासन प्रतिमाएँ धोती युक्त और पृष्ठ भाग में अलंकृत भामंडल है। पृष्ठ भाग के उभय पक्ष में खड्गासन प्रतिमाएँ धोती युक्त और पृष्ठ भाग के तोरण स्तंभ पर दो पद्मासन प्रतिमाएँ, बगल में सिंह और मकर मुख है। सिंहासन के मध्य भाग में वस्त्र लटक रहा है, धर्मचक्र के दोनों ओर सिंह

और दो हाथी हैं। सिंहासन के दोनों ओर यक्ष यक्षी एवं नीचे चैत्यवंदन करते भक्त युगल के मध्य में नवग्रह स्थापित है।

६. **देवी प्रतिमा** - यह अश्वारूढ देवी की प्रतिमा सं. ११११२ में छाहड़ के निर्मापित है। देवी चारों हाथों में आयुध धारण किए हुए है घोड़ा चौकी पर खड़ा है।

७. **पार्श्वनाथ सप्तफण** - यह प्रतिमा सप्तफण युक्त पार्श्वनाथ भगवान की किसी श्राविका द्वारा निर्मापित है और कमलासन पर विराजमान है। तोरण स्तंभ के सहारे पृष्ठ भाग में धर्म चक्र और ऊपर ऊँचे शिखर की भांति कलश है।

८. **पार्श्वनाथ** - यह डमरू आकार के कमलासन पर विराजमान सप्तफण मय प्रतिमा है। उभय पक्ष में त्रियष्टि स्तंभ और पृष्ठ भाग के सांप के आकार गोड़ों के पास से ऊपर गया है। दोनों ओर के सांप सप्तकुंडली कृत न होकर पृथक प्रतीत होते हैं।

९. **आदिनाथ पंचतीर्थी** - सिंहासन के उभय पक्ष में यक्ष यक्षी दोनों ओर चामरधारी के मध्य में दो काउसग्गिया और ऊपर पद्मासन प्रतिमा है। मध्यवर्ती आदिनाथ के मस्तक पर छत्र और दोनों ओर किन्नर व प्रभु के पीछे प्रभा मंडल है।

१०. **पार्श्वनाथ त्रितीर्थी** - स्पष्ट तक्षण कला वाली इस प्रतिमा के पृष्ठ भाग में ऊँची सप्तफणावली और दोनों ओर धोती पहने खग्डासन प्रतिमा है। भगवान के नीचे पब्बासन और तन्निम्न भागवर्ती कमल की पांखुड़ियों के नीचे वस्त्र उभयसिंहों के मध्य दिखाया है। दाहिनी ओर यक्ष एवं बांये तरफ अम्बिका देवी विराजमान है। मध्यवर्ती धर्मचक्र के आगे कमल पर यक्ष बैठा है।

११. **पार्श्वनाथ त्रितीर्थी** - यह प्रतिमा सप्तफण मंडित सिंहों के ऊपर लटकते पब्बासन पर विराजमान है। उभय पक्ष में धोती पहनी है और ऊपर छत्र लगा है। निम्न भाग के दाहिने यक्ष व अंबिका देवी अलंकृत टोडी पर कमलासन पर विराजमान है। यह प्रतिमा दुर्गराज कृत स्नात्र प्रतिमा हो सकती है।

१२. **पार्श्वनाथ** - यह प्रतिमा सप्तफण के ऊपर पट्टिका और कांस्य युक्त है। नवग्रह सिंहासन के वस्त्र उभय काउसग्गियों के पास स्तंभ व निम्न भाग में नवग्रह है।

१३. **समवशरण प्रतिमा** - यह चौमुख शिखर बुद्ध प्रतिमा भी देवालय जैसी लगती है प्रायः सभी प्रतिमाएँ राजस्थानी शिल्प कला से अनुप्राणित है।

१४. **देवी** - इन प्रतिमाओं के साथ एक अत्यन्त सुंदर कला पूर्ण स्त्री मूर्ति प्राप्त हुई है जो त्रिस्तरीय कमलासन पर लचीली देहदृष्टि को किञ्चित दाहिनी ओर किये खड़ी है। इसके पैरों में नुपूर हाथ में दोनों ओर बंगड़ियों के बीच चूड़ियां है। साड़ी बहुत ही सुंदर है और उत्तरीय को भुजबंद के पास नितंब तक ढंग से मोड़कर नीचे गोड़ो तक लहराता दिखाता है। त्रिवलीदार गले के नीचे हार और तिलड़ी नाभि के ऊपर तक पहनी हुई है, मुद्रा की भांति बड़े कर्णफूल सुशोभित हैं। यह प्रतिमा राजस्थानी प्राचीन कला का प्रतिनिधित्व करने वाली भाव भंगिमा युक्त है।

शंकरदान नाहटा कला भवन - हमारे इस कला भवन में जैन जैनेत्तर अनेक धातुमय प्रतिमाओं का संग्रह है जिसमें दो प्रतिमाएँ प्राचीन और कलापूर्ण है।

१. पार्श्वनाथ त्रितीर्थी - यह सपरिकर प्रतिमा सं. १०२१ की क्लिपत्यकूप चैत्य के गोष्ठी द्वारा निर्मापित स्नात्र प्रतिमा इसके पृष्ठ भाग में लिखे कुटिल लिपि के लेख से स्पष्ट है। इसमें उभय पक्ष में अवस्थित क्राउसग्ग मुद्रा वाली प्रतिमाओं के धोती पहनी है। और वे पब्बासन के नीचे से निकले कमलासन पर खड़े है। उभय पक्ष में एक ओर सांप पर पद्मावती दूसरी ओर गजारूढ़ देवी है। सिंहासन के मध्य में भी एक व्यक्ति विराजित है। निम्न भाग में नवग्रह और उसके उभय भाग में सिंहासनों के पायों से निकले कमलासन पर दाहिनी ओर गजारूढ़ और बांये तरफ सिंहवाहिनी अंबिका है जिनकी गोद में बालक परिलक्षित है। काउसग्गियों के आसन से फिर प्रतिशाखा निकलकर दोनों ओर अपने दोनों हाथों में वस्त्र धारण किए बैठे है। प्रतिमा के सप्तफण का अर्द्धभाग खंडित हो जाने से दूसरे पीतल के सप्तफण

बनाकर जोड़ दिये गये है। नेत्रों में चांदी की मीनाकारी या रत्न जटित रहे होंगे जिन्हें जला दिया गया है अतः खड्डे मात्र रह गये है। नीचे पायों पर सिंह खड़े है मध्य भाग में एक व्यक्ति की मूर्ति है।

दूसरी प्रतिमा एकतीर्थी सपरिकर है। भगवान के ऊपर छत्र व पृष्ठ भागों में प्रभामंडल है फूल की पंखुड़ियों वाला है। जिसके आगे पट्टिका के ऊपर भगवान विराजित है। उभय पक्ष में चामरधारी व ऊपर बाल किये किन्नर व नीचे उभय पक्ष में यक्ष व अम्बिका है। प्रतिमा के हाथ जर्जर हो गए है। (संवत ११३० जेष्ट सु १०)

श्री मोतीचंदजी खजानची के संग्रह में दो धातुमय चौवीसियां है।

चौबीसी - सं. १२३१ की चौवीसी है जिसमें २१ प्रतिमाएँ परिकर के सिरे पर सभी सर्वाज में है। मूलनायक के दोनों ओर दो काउसग्गीए है। मूलनायक भगवान के नेत्रों में रजत बैठाया हुआ है। परिकर के दोनों ओर अंबिका व यक्ष सिंहासन पर उभय पक्ष में सिंह व मध्य में कोई देवचन्द्र है परिकर के निचले किनारे में दो व्यक्ति खड़े हैं उनके ऊपर ग्रास है।

प्रतिमा - सं. ११७९ की चौवीसी भी सुन्दर कलापूर्ण और भिन्न अलंकारिक कक्ष शैली की है।

चन्द्रवा सं १५१७ का है जिस पर जरी का काम है।

श्री चिन्तामणि जी का मंदिर - बीकानेर नगर के सर्व प्राचीन चिन्तामणि चौवीसटा जी के मंदिर में धातु प्रतिमा का जितना बड़ा संग्रह है एक मंदिर में शायद समग्र भारत में कहीं नहीं है। यहां के भूमिग्रह में ११०० के लगभग धातु प्रतिमाएँ है जिनके अभिलेख हमने बीकानेर जैन लेख संग्रह में प्रकाशित किए थे पर तत्रस्थित प्रतिमाओं का कलात्मक अध्ययन नही हो सका था। थोड़ी सी प्राचीन कलापूर्ण प्रतिमाओं का समूह चित्र उपर्युक्त ग्रंथ में दिया गया है। एक प्रतिमा विशाल और सुंदर कलापूर्ण प्राचीन है। जिस पर लगभग बारह सौ वर्ष प्राचीन ऊँ सन्ति गणि खुदा हुआ है। सहस्राब्दि प्राचीन अवशिष्ट प्रतिमा में अनेकविधाए है। कोई सपरिकर, कोई त्रितीर्थी कोई इकतीर्थी कोई पंचतीर्थी कोई सतोरण चौमुखजी और कोई अपनी विविध शैलीगत विशेषता वाली है। एक गुप्त कालीन कार्योत्सर्ग मुद्रा की प्रतिमा अत्यन्त सुंदर चिंतामणि जी

के सभामंडल में थी। इस प्रतिमा के धोती पहनी हुई है और पालिश बहुत ही सुन्दर है जो परवर्ती प्रतिमाओं में नही मिलती। इसे सुरक्षित बैंक में रखा गया है। चिंतामणि जी मंदिर के मूलनायक प्रतिमा श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टक दादा श्री जिनकुशल सूरि प्रतिष्ठित मंडोवर मूलनायक थी जो बीकानेर बसने के समय लायी गयी थी। कामरां के द्वारा परिकर भग्न कर देने पर सं. १५९२ में बच्छावत परिवार ने जीर्णोद्धारित किया था।

इसी मंदिर के अहाते में श्री शांतिनाथ जिनालय में मूलनायक पार्श्वनाथ जी की धातु प्रतिमा भी मनोहर और सं. १५४९ में जिन समुद्र सूरि जी द्वारा प्रतिष्ठित है।

स. १५८० में हेमविमल सूरि प्रतिष्ठित धातुमय यंत्र पट में शत्रुञ्जय, आबू, गिरनार, नवपद, समवशरण, चौवीसी, बीस विहरमान उत्कीर्णित है।

महावीर स्वामी का मंदिर - (बैदों का चौक) इस मंदिर में भी सैकड़ो धातु प्रतिमाएँ भण्डार में है जिनके पूरे लेखों का संग्रह और अध्ययन आवश्यक है। स. १५३४ की श्री सीमंधर प्रतिमा, सं. १५३१ का कलिकुण्ड यंत्र एवं सर्वतोभद्र यंत्र, दुरितारि विजय यंत्र, षोडश यंत्र (सं. १६६३ ई. दि. रलकीर्ति उपदेश से), ह्रींकार यंत्र (स. १५६१ रूद्रपल्लीय गच्छ अ.) अष्टांग सम्यदर्शन यंत्र आदि धातुमय कितनी ही कलात्मक वस्तुओं के साथ एक धातु की विशाल प्रतिमा सं. १५२७ में मं. भुवन कीर्ति प्रतिष्ठित और सिंहासन सं. १७२७ उदयपुर में श्री सुमतिसागर सूरि के उपदेश से बना है। इस को सूत्रधार गणेश और कंसारा मानजी के पुत्र प्रताप ने बनाया है। अंबिका देवी की ३ प्रतिमाएँ सं १३५१, १३५५, १३८१ और १४६९ की प्रतिष्ठित हैं। चांदी की चक्रेश्वरी देवी व चांदी के नवपद यंत्रादि धातु की वस्तुएं है।

श्री अजित नाथ जिनालय - यहां सन् ५२३ में मंत्रीदलीय श्रावक द्वारा निर्मापित और जिनहर्षसूरि द्वारा प्रतिष्ठित गौतम स्वामी प्रतिमा, कुरू जांगाल के सपीदो नगर में सं १६८८ में निर्मित पीठ पर ऊँची चौकी पर गुरू महाराज दोनों पाँव नीचे किए हाथ जोड़े बैठे हैं। इसके अभिलेख में दिगम्बर साधु साध्वियों के नाम व निर्मापित का नाम है।

श्री चन्द्रप्रभ जिनालय -यहाँ अन्य धातु प्रतिमाओं के साथ अष्ट दल कमलाकृति प्रतिमा सिरोही में श्री जिनचंद्रसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है। चांदी की दो प्रतिमाओं में से एक सं. १७६४ की है। सोनी धाहरू द्वारा निर्मित व दूसरी सं. १९५१ की है।

श्री सुपार्श्वनाथ मंदिर - में स. १७९४ के चौमुखजी स. १५१६ की चांदी की सपरिकर नेमिनाथ प्रतिमा स. १५८१ का कलिकुण्ड यंत्र आदि है।

महावीर स्वामी के मंदिर - आसानियों के चौक में स: १३९० में ज्ञानचन्द्र जी प्रतिष्ठित मल्लिनाथ भगवान का धातुमय सिंहासन है।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी के मंदिर में स. १२७८ प्रतिष्ठित रूधरिका देवी प्रतिमा है।

बीकानेर में अष्टदल कमल के मध्य में एवं प्रत्येक पंखुड़ी पर जिन प्रतिमाएँ जिनचंद्रसूरिजी प्रतिष्ठित कतिपय उपलब्ध है। सं. १८९५ में रणजीत सिंह के राज काज में पिंडी में है। यह प्रतिमा उ. जयचन्द्रजी के भंडार में है।

तारानगर के प्राचीन मंदिर में स. १०५८ प्रतिष्ठित शीतलनाथ भगवान की धातुमय प्रतिमा अत्यन्त सुंदर और कलापूर्ण है। सुजानगढ़ के मंदिर में चांदी की थाली में घंटा कर्ण यंत्र है। देशनोक के भूरों के वास के मूलनायक प्रतिमा शांतिनाथ स्वामी की बीकानेर में ही निर्मापित है।

जैसलमेर में हजारों जिन प्रतिमाएँ है जिनमें धातु प्रतिमाएँ भी कलापूर्ण संख्याबद्ध है। शांतिनाथ जिनालय की मूलनायक प्रतिमा सं. १५३६ प्रतिष्ठित है एवं गजारूढ़ श्रावक प्रतिमा भी सा. रेवता के पुत्र की है जो सं. १५९० की निर्मापित है। चंद्रप्रभ जिनालय में एक प्रतिमा सं. १०८६ की है जिसमें नागेन्द्र - सिद्धसेन दिवाकराचार्य गच्छ का लेख है। लौद्रवाजी में मायाबीज यंत्र सं. १६७३ का है और धातुमय विशाल कल्पवृक्ष और कलात्मक अभ्दुत वस्तु है।

गांगाणी तीर्थ जोधपुर के सन्निकट है। जहां सं. १६६२ में एक तलधर में लगभग ६० प्रतिमाएं निकली थी जिनमें सम्राट सम्प्रति और चन्द्रगुप्त द्वारा निर्मापित प्राचीनतम लेख वाली प्रतिमाएँ थी। उस जमाने में प्राचीन लिपि का अभ्यास न होने पर भी विद्वान जैनाचार्य श्री जिनराजसूरि

जी ने अंबिका देवी की सहायता से लिपि पढ़ी थी । प्रतिमाओं में एक अर्जुन हेम - प्लेटिनम की भी पार्श्वनाथ प्रतिमा की आश्चर्यजनक उपलब्धि हुई थी। कविवर समयसुंदर जी ने स्तवन में इसका विस्तृत वर्णन किया है और उसके साथ थोड़ी अन्य प्रतिमाएँ व धूपदान, कंसाल जोड़ी आदि उपकरण भी निकले थे। अब वे प्रतिमाएँ कहाँ है कब छिपा दी गई पता नही परन्तु अब भी गंगाणी के मंदिर में स. ९३७ के अभिलेख वाली ऋषभदेव प्रतिमा अत्यन्त सुंदर कलापूर्ण है इसका परिकर कहीं भंडार में हो सकता है।

जोधपुर के मंदिर में भी कई सुंदर कलापूर्ण विविध प्रकार की प्रतिमाएँ है। सिरोही के कलापूर्ण मंदिर विख्यात है वहाँ आस पास के अनेक गॉवों में सहस्त्राब्द पूर्व के मंदिर विद्यमान है। वसन्त गढ की दुर्लभ प्रतिमाएँ भी पिण्डवाड़ा के जैन मंदिर में होने का आगे उल्लेख किया जा चुका है। सिरोही के सभी मंदिरों में कलापूर्ण प्राचीन प्रतिमाएँ है। श्री अजितनाथ जी के मंदिर में १७२ धातुमय प्रतिमाएँ हैं तथा उसके आगे बांयी तरफ पुरातत्व मंदिर है जिसमें दशवीं शताब्दी से लगाकर सोलहवी शती की ५४० प्रतिमाएँ सुरक्षित है। आदिनाथ जिनालय के अर्न्तगत सुमतिनाथजी के गंभारे के भूमिग्रह में १००० धातु प्रतिमाएँ १२वीं शती तक की है। इस मंदिर में २९३ सर्व धातु की व ५ चांदी की प्रतिमाएँ है शांतिनाथ मंदिर में ३३ धातु प्रतिमाएँ है दूसरे सभी मंदिरो में अनेक धातु प्रतिमाएँ है।

आबू अचलगढ़ तो अपनी शिल्प समृद्धि के लिए विश्व विख्यात है। अचलगढ़ में विशाल जिन प्रतिमाएँ १४४४ मन तोल की है। जिसमें स्वर्ण का भाग अधिक परिमाण में है। सहस्त्रब्दि पूर्व भी विशाल प्रतिमाएँ निर्माण की जाती थी विमल प्रबन्ध से ज्ञात होता है कि विमल वसही के मूलनायक प्रतिमा भी पितलम्य थी यह :-

वस्तु - विमलवसही विमलवसही विमलप्रसाद
पितलमइ अदार भारजी आदिनाथ प्रतिमा प्रसिद्धि
संवत १०८८ वर प्रतिष्ठ शुभ लग्नि कीधी

नागौर - नागौर के बड़े मंदिर में धातु प्रतिमाएँ पर्याप्त प्राचीन और कलापूर्ण भी है। एक अन्य मंदिर के सभामंडल में कलापूर्ण समवसरण या मेरू पर्वत देखा था जो लगभग ३५ - ४० इंच ऊँचा होगा। नागौर जैसे प्राचीन नगर में दिगम्बर व श्वेताम्बर मंदिरों में कलात्मक उपादानों के विषय में अन्वेषण अपेक्षित है। मुस्लिम काल से पूर्व नागौर के जिनालयों की जो संख्या व स्थिति थी, प्राचीन स्तवनादि से विदित होता है कि धातुमय तोरण व परिकर युक्त विशाल प्रतिमाएँ भी अवस्थित थी।

राजस्थान और गुजरात के प्रत्येक नगर में कुछ न कुछ धातु प्रतिमाओं में कला वैशिष्टय मिलता ही है। श्री केशरिया नाथजी तीर्थ में चौवीसी विद्या की एक धातुमय प्रतिमा में तीन चौवीसीया - ७२ जिन बिम्ब अवस्थित है।

अहमदाबाद के वाघण पोल स्थित अजितनाथ जिनालय की धातुमय कार्योत्सर्ग मुद्रा की विशाल जिन प्रतिमा पिण्डवाड़ा शैली की परम्परागत अनुकृति है। यह सरल परिकर वाली आकर्षक प्रतिमा है जिसके उभय पक्ष में चामरधारी खड़े हैं और एक साधु व एक श्रावक चैत्यवंदन करते हुए बैठे हैं। इस पर सं. १११११ का अभिलेख भी उत्कीर्णित है।

विजय यंत्र - इसका प्रभाव आचार्य जिनप्रभसूरि द्वारा प्रत्यक्ष देखकर सम्राट मुहम्मद तुगलक ने दो ताम्रमय विजय यंत्र बनवाकर सूरिजी को एक व एक स्वयं अपने पास हरदम रखने लगा।

इन्द्र प्रतिमा - इन्द्र की चामरधारी प्रतिमाएं तो पंचतीर्थी आदि में पाई जाती है। पर भगवान के जन्माभिषेक के समय की एक प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में है जिसके उपेद में एक छिद्र है जिसमें भगवान की एक प्रतिमा बैठाकर अभिषेक करने के लिये बनाई गई प्रतीत होती है। प्रतिमा के मस्तक पर मुकुट आदि देखकर जीवित स्वामी की प्रतिमा होने का भ्रम होता है। ऐसी इन्द्र प्रतिमा अन्य कहीं नहीं देखी गई ।

अष्ट कमल -लगभग ४०० वर्ष से अष्टदल कमलयुक्त प्रतिमा निर्माण के कई उदाहरण बीकानेर में देखे गये हैं। बीकानेर और सिरोही में स्थित ऐसी प्रतिमाओं के मध्य स्थित वर्णिका पर एक जिन प्रतिमा और

उसके आसन के निम्न भाग से भिन्न-२ अष्ट दल पिरोये हुए जैसे संलग्न रहते हैं। जिसमें ८ भगवान की ८ प्रतिमाएँ बनी रहती है। उन्हें बंद करने पर बंद कमल और खोल देने पर विकसित कमलाकर ये मध्य वेदी सहित नौ प्रतिमाओं के एक साथ दर्शन हो जाते है। दिल्ली के नौघरा मंदिर में इस विधा का विकसित रूप देखा गया है जिसमें डबल स्तर में अत्यन्त सुंदर ढ़ंग से जिन प्रतिमा नव पद आदि बने हुए हैं। मंदिरों के शिखर पर स्वर्ण कलश और ध्वज दण्ड भी पीतल के विशेष प्रकार के बने है। जिस पर पाटली भी अर्द्धचंद्रादि आकार मय होती है।

स्वर्ण कमलमय - हमारे शंकरदान नाहटा कला भवन में एक स्वर्णमय कमलासन है जिसके मध्य में रत्न प्रतिमा विराजमान हो सकती है। इस समय उसमें हाथी दांत की जिन प्रतिमा है।

सिद्ध प्रतिमा - अर्हन्त भगवान तो सशरीर होते हैं। पर सिद्ध भगवान तो अरूपी आत्मप्रदेश मात्र हैं। उनका रूप चित्रण कैसे हो उनके दर्शन कैसे हो ? इस समस्या का समाधान दिगम्बर परम्परा में निकाला गया और पितल - चांदी और धातु के पात को खड्गासन कर मध्य में केवली समुद्धातान्तर त्रिभाग धनीभूत आत्मप्रदेश का प्रतीक आकाश प्रदेश खाली रख दिया गया। यह सिद्ध मूर्ति के दर्शन की विधा प्रायः दिगम्बर मंदिरों में दृष्टिगोचर होती है श्वेताम्बर समाज ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया।

अष्ट मंगल - प्राचीन शास्त्रों में चित्रों में अष्ट मंगल का प्राचुर्य पाया जाता है सतरह भेदी पूजा में भगवान के समक्ष चावलों से अष्ट मंगल लिखने का उल्लेख है। पर वह कार्य कठिन होने से चांदी, पीतल, कांस्य के अष्ट मंगल पट्ट भी सिद्ध चक्र यंत्रादि की भांति प्रत्येक मंदिर में पाये जाते है। इनमें एक लंबी पट्टिका पर अष्ट मंगल बने रहते है। कई लोग इनकी पूजा करते है वस्तुतः यह पूजा की नही, चढ़ाने की वस्तु है।

क्रमशः

भ० महावीर स्वामी का निर्वाण एवं प्रकाशपर्व दीपावली

उपाध्याय मुनिश्री कामकुमारनन्दी जी महाराज

सन् ईस्वी ५२७ साल, विक्रमी संवत् से ४७० वर्ष, राजा शक से ६०५ साल ५ महीने पहिले कार्तिक बदी चौदस, सोमवार और अमावस्या, मंगलवार के बीच में प्रातःकाल जब चौथे काल के समाप्त होने में तीन वर्ष साढे आठ महीने बाकी रह गये थे, केवलज्ञान के प्राप्त होने के २९ साल ५ महीने २० दिन बाद, ७१ वर्ष ३ महीने २५ दिन की आयु में भगवान् महावीर ने मल्लों की पावापुरी नगरी में निर्वाण प्राप्त किया। स्वर्ग के देवताओं ने उस अन्धेरी रात्रि में रत्न बरसाकर रोशनी की। जनता ने दीपक जलाकर उत्साह मनाया। राजाओं ने वीर निर्वाण की यादगार में कार्तिक बदी चौदस और अमावस्या की दोनों रात्रियों को हर साल दीपावली पर्व की स्थापना की। उस समय भगवान महावीर की मान्यता ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्ण करते थे इसलिये दीपावली के त्यौहार को आज तक चारों वर्णों वाले बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं।

उस समय पावा की शोभा देखते ही बनती थी। ९ लिच्छवी, ९ मल्ल और १८ काशीकौशल गणराज्य तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर के परिनिर्वाण के समय उपस्थित थे। इन्द्रभूति गौतम पड़ोस के एक गाँव में गये हुए थे। उन्हें भी उसी दिन कैवल्य - लक्ष्मी उपलब्ध हुई। इस तरह यह दिन प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाने लगा। रुढ़ियों ने भले ही तथ्यों को ढक लिया हो किन्तु दीपावली महावीर की परिनिर्वाण बेला के रूप में सदियों से मनायी जाती है।

भगवान् महावीर का तो यह मुक्तिपर्व था ही, लोगों ने इसे व्यवहारिक मुक्तिपर्व के रूप में भी मनाना आरम्भ कर दिया। व्यापारी इसे हिसाब मुक्ति के रूप में, गृहस्थी इसे अस्वच्छता मुक्ति की तरह घर का सारा कूड़ा - करकट निकालकर और समाज इसे शत्रुता मुक्ति के रूप में मनाता है। नगर और घर की सारी अशोभा, असौन्दर्य और कुरुपता मिट जाती है और पुरानेपन की जगह एक नूतनता दिखायी देने लगती है। इसे नूतन वर्षारंभ के रूप में मनाया जाता है। इस तरह जीवन से शिथिलता और प्रमाद को विदा कर लोग नयी स्फूर्ति से अपने - अपने काम में लग जाते है।

महावीर निर्वाण दिवस शताब्दियों से एक महान् पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। यही एक ऐसा पर्व है जिसे सम्पूर्ण राष्ट्र किसी न किसी रूप में एकरुपता के साथ मनाता है। जैनमात्र इसे बड़ी उमंग और उल्लास के साथ सम्पन्न करता है। कुछ इसे व्रतानुष्ठान और कुछ एक सांस्कृतिक उल्लास के साथ मनाते हैं किन्तु सभी अपने घरद्वार सजाते हैं, वन्दनवारें बाँधते हैं, अल्पनाएँ संजोते हैं, दीप - पक्तियाँ सज्जित करते हैं। सब स्नेह के एक विशाल धरातल पर एक गहरे बन्धुत्व का अनुभव करते हैं, कोई बैरभाव नहीं रखता, एक गहरी मैत्री, ताजगी, स्फूर्ति, चारों ओर फैल जाती है। लगभग ढ़ाई हजार वर्षों से मनाया जा रहा यह पर्व आज भी उतना उल्लास और उतनी ही ताजगी लिये हुए है।

दीपावली एक ऐसा पर्व है जिसके चारों ओर एक निर्मल आध्यात्मिक आभा छायी हुई है। यह एक ऐसी प्रातः स्मरणीय महान् लोकविभूति की आराधना - अर्चना और पुण्य स्मरण का पर्व है, जिसने संसार पर मंडराती हिंसा, असत्य और परिग्रह की कलुष्य अमावस्या को हराया था और लोकशक्ति के आँगन में विवेक के दीपकों की एक अबुझ पंक्ति संजो दी थी, जो युगों से ऐसी अमावस्याओं से जूझती आ रही है और आज भी अपराजित है। प्रकाश की राह पर आज भी उसके वे वन्दनीय चरण - चिन्ह स्पष्ट दिखायी दे रहे है।

आर्य समाजी महर्षि स्वामी दयानन्द जी, सिखों के छठे गुरु श्री हरगोविन्दजी, हिन्दू श्री रामचन्द्र जी, जैनी वीर निर्वाण और कुछ महाराजा अशोक की दिग्विजय को दीपावली का कारण बताते हैं। कुछ का विश्वास है कि राजा बलि की दानवीरता से प्रसन्न होकर विष्णु जी ने वर माँगा था कि कार्तिक बदी तेरस से दोयज तक ५ दिन का जो उत्सव मनायेंगे उनकी अकाल मृत्यु नहीं होगी इसलिये दीपावली मनाई जाती है। परन्तु दीपावली एक प्राचीन त्यौहार है। यह त्यौहार महर्षि स्वामी दयानन्द जी और छठे गुरु श्री हरगोविन्द जी से बहुत पहले मनाया जाता है। श्री रामचन्द्र जी के अयोध्या में लौटने की खुशी में दीपावली के आरम्भ होने का उल्लेख रामायण या किसी और प्राचीन हिन्दू ग्रंथ में नहीं मिलता। विष्णु जी तथा अशोक दिग्विजय के कारण दीपावली का होना किसी ऐतिहासिक प्रमाण से सिद्ध नहीं होता। प्राचीन जैन ग्रन्थों में कथन अवश्य है कि -

जिनेन्द्रवीरोऽपि विवोध्य संततं समंततो भव्यसमूहसंततिम्।
प्रवद्य पावानगरीं गरीयसीं मनोहरोद्यानवने यदीपके।।१५।।
चतुर्थकालेऽर्थमासकै र्विहीनताविश्चतु रब्दशेषके।
सकीतिके स्वातिषु कृष्णभूतसुप्रभातृसन्ध्यासमये स्वभावतः।।१६।।
अचातिकर्माणि जिरुद्धयोगको विधूय घातीं धनवद्विबंधनम्।
विबन्धनस्थानमवाप शंकरो निरन्तरायोरु सुखानुबन्धनम्।।१७।।
ज्वलत्प्रदीपालिकया प्रबुद्धया सुरासुरैर्दीपितया प्रदीप्तया।
तदास्म पावानगरी समन्ततः प्रदीपिताकाशलता प्रकाशते।।१९।।
ततस्तु लोकः प्रतिकर्षमादरात् प्रसिद्धदीपालिकायत्र भारते।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणविभूति भक्तिभाक्।।१९।।

श्री जिनसेनाचार्य हरिवंशपुराण, सर्ग ६६

भावार्थ - जब चौथे काल के समाप्त होने में तीन वर्ष साढ़े आठ महीने रह गये थे तो कार्तिक की अमावस्या के प्रातःकाल पावापुर नगरी में भगवान् महावीर ने मोक्ष प्राप्त किया, जिसके उपलक्ष्य में चारों प्रकार के देवताओं ने बड़ा उत्सव मनाया और जहाँ

- तहाँ दीपक जलाये। जिनकी रोशनी से सारा आकाश जगमगा उठा था। उसी दिन से आज तक श्री जिनेन्द्र भगवान् के निर्वाण - कल्याणक की भक्ति से प्रेरित होकर लोग हर साल भरत क्षेत्र में दीपावली का उत्सव मनाते हैं।

कार्तिक बदी चौदश और अमावस्या की रात्रि में भगवान् महावीर समस्त कर्मरूपी मल को दूर करके सिद्ध हुए। कर्म - मल से शुद्धि के स्थान पर हम उस रात्रि को कूड़ा निकालकर घरों की शुद्धि करते है। उसी दिन भगवान् महावीर के प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम जी ने केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी प्राप्त की थी। जिसकी पूजा देवों तक ने की थी, उस स्थान पर चंचल लक्ष्मी तथा गणेश जी की पूजा होती है। गणेश नाम गणधर का है। वीर के समवसरण में मुनिवरों, कल्पवासी इन्द्राणियां, आर्यिकाओं व श्राविकाओं, ज्योतिषी देवांगनाओं, व्यन्तर देवियों, प्रासाद निवासियों की पद्मावती इत्यादि देवियों, भवनवासी देवों, व्यन्तर देवों, चन्द्र - सूर्य इत्यादि ज्योतिषी देवों, कल्पवासी देवों, विद्याधरों व मनुष्यों, सिंह - हिरण इत्यादि पशु - पक्षियों व तिर्यंचों के बैठकर धर्म उपदेश सुनने के लिये १२ सभाएँ होती हैं, उसके स्थान पर लीप - पोतकर लकीरें खींचकर कोठे बनाना और वहाँ मनुष्य और पशुओं आदि के खिलौने रखना, वीर के समवसरण का चित्र खींचने की चेष्टा करना है तथा भगवान् महावीर जहाँ विराजमान् होते हैं, उनके स्थान पर हम घरूण्डी (हटड़ी) रखते हैं। वीर निर्वाण के उत्सव में देवों ने रत्न बरसाये थे, उनके स्थान पर हम खील - बताशे बाँटते हैं। उस समय के राजाओं - महाराजाओं ने वीर निर्वाण के उपलक्ष्य में दीपक जलाकर उत्सव मनाया था, उसके स्थान पर हम दीपावली मनाते है। यह हो सकता है कि अमावस्या की शुभ रात्रि में महर्षि स्वामी दयानन्द जी स्वर्ग पधारे, श्री रामचन्द्र जी अयोध्या लौटे या औरों के विश्वास के अनुसार और भी शुभ कार्य हुए हों परन्तु इस पवित्र त्योहार पर होने वाली क्रियाओं पर विचारपूर्वक खोज करने से यही सिद्ध होता है कि दीपावली, वीरनिर्वाण से ही उनकी यादगार में आरम्भ होने

वाला पर्व है, जैसा कि लोकमान्य पं० बालगंगाधर तिलक, डॉ. रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि अनेक ऐतिहासिक विद्वान स्वीकार करते है।

केवल दीपावली का त्योहार ही नहीं वरन् भगवान महावीर की स्मृति में सिक्के ढाले गये। वर्द्धमान नाम पर वर्द्धमान और वीर नाम पर वीरभूमि नाम के नगर आज तक बंगाल में प्रसिद्ध हैं। विदेह क्षेत्र में भगवान महावीर का अधिक विहार होने के कारण उस प्रान्त का नाम ही बिहार प्रान्त पड़ गया। भारत के ऐतिहासिक युग में सबसे पहला संवत् जो वीरनिर्वाण से अगले दिन ही कार्तिक सुदी एकम् से शुरु होता है, उस दिन हम अपनी पुरानी बहियाँ बन्द करके नई शुरू करते है। अवश्य भगवान् महावीर के सन्मुख भारत निवासियों की श्रद्धा और भक्ति प्रकट करने वाला वीरसम्वत् है। इस प्रकार न केवल जैनों पर ही किन्तु अजैनों पर भी श्री वर्द्धमान का गहरा प्रभाव पड़ा।

जैन धर्म में पुण्य और पाप तत्व

डा. मुकुल राज मेहता

कुछ दार्शनिकों ने पुण्य और पाप तत्व को स्वतन्त्र द्रव्य के रूप में स्वीकार किया है। आगम साहित्य में भगवती शतक,[1] प्रज्ञापना,[2] उत्तराध्ययन[3] आदि में भी तत्वों की संख्या नौ बताई गयी है लेकिन आचार्य उमास्वाति ने अपने द्रव्य संग्रह ग्रन्थ में पुण्य और पाप को आस्रव या बन्ध तत्व में समाहित कर तत्वों की संख्या सात ही माना है।[4] यहाँ पर पुण्य और पाप तत्व का संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है।

पुण्य और पाप तत्व अजीव तत्व के अन्तर्गत ही आते है। व्यक्ति के कर्म के अनुसार ही उसे फल की प्राप्ति होती है। अर्थात् पुण्य शुभ कर्म पुद्गल है और पाप अशुभ कर्म पुद्गल। शुभ कार्य करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। तथा अशुभ कार्य करने से पाप फल की प्राप्ति होती है। जिन शुभ और अशुभ कर्मों को अजीव कहा है वे तो आत्मा की मात्र भाव रुप प्रवृतियाँ ही है।

जैन दार्शनिकों ने आत्मा की शुभ रुप वृत्ति और प्रवृत्ति को तो मन, वचन और काम रुप योग आश्रय के अन्तर्गत रखा है।[5] मन, वचन, शरीर की शुभ व अशुभ प्रवृत्ति से जिस कर्म पुद्गल का आत्मा के साथ सम्बन्ध होता है, वे कर्म पुद्गल यदि शुभ है तो पुण्य है और यदि अशुभ हैं तो पाप है। इस प्रवृति के बाद जिन कर्म पुद्गलों का सम्बन्ध आत्मा के साथ होता है। तब वह द्रव्य पुण्य - पाप कहलाता है। इस प्रकार जो भाव रुप पुण्य - पाप हैं वे जीव के विचार हैं और जो द्रव्य रुप पुण्य - पाप हैं वे

---

१. अभिगम जीवाजीवा उवलद्ध पुण्णपावा आसव संवर णिज्जर किरियाहिगरण बन्ध मोक्ख कुसला। भगवती शतक। २. प्रज्ञापना ३. उत्तराध्ययन २८/१४ ४. तत्वार्थ सूत्र १ / ४ ५. कायवाङ् मनः कर्मयोगः स आस्त्रवः। त० सू० ६ / १.२

अजीव हैं। आत्मा की शुभ - अशुभ रुप प्रवृतियाँ दो प्रकार की होती हैं - भाव रुप तथा द्रव्य रुप। भाव रूप पुण्य व पाप जीव के अन्तर्गत आते हैं तथा द्रव्य रूप पुण्य व पाप अजीव के अन्तर्गत आते है।

पुण्य - पाप रूप कर्म के ये दो भेद वेदना की दृष्टि से किये गये है। वेदना के अतिरिक्त अन्य दृष्टियों से भी कर्म के भेद किये गये है। कर्म को उचित और अनुचित समझने की दृष्टि से बौद्ध और योग दर्शनों में कृष्ण, शुक्ल, कृष्ण - शुक्ल और अशुक्लाकृष्ण चार भेद किये गये है।[१] कृष्ण पाप है, शुक्ल पुण्य है। शुक्ल कृष्ण पुण्य व पाप का मिश्रण है और अशुक्ला कृष्ण न तो पाप है और न ही पुण्य। अर्थात, वह कर्म वीतराग पुरुषों को होता है। इसका विपाक न सुख है और न दुःख, क्योंकि वीतराग पुरुषों में राग द्वेष नहीं होता है।[२]

पुण्य व पाप तत्व में भेद

शुभ कर्मों के अन्तर्गत जितने शुभ पुद्गल आते हैं वे पुण्य होते हैं। दीन - दुःखी पर दया करना उनकी सेवा करना, परोपकार करना आदि अनेक प्रकार से पुण्य प्राप्त किया जा सकता है। शास्त्रों में पुण्य प्राप्त करने के नौ भेद बताये गये है। वे इस प्रकार हैं।

१. अन्नपुण्य
२. लपन (स्थान) पुण्य
३. पान पुण्य
४. शयन (शैया) पुण्य
५. वस्त्र पुण्य
६. मन पुण्य
७. वचन पुण्य
८. काय पुण्य
९. नमस्कार पुण्य

उपर्युक्त भेदों को स्पष्ट किया जाय तो अन्न, जल, औषध आदि वस्तुओं का दान करना - ठहरने के लिए स्थान देना, मन से शुद्ध भाव रखना, वचन से मधुर, सत्य और हितकारी निर्दोष बोलना, शरीर से शुभ कार्य करना, देव, गुरु, धर्म व अभिभावक आदि को नमस्कार करना ये सभी कर्म पुण्य फल देने वाले होते है।

---

१. योग दर्शन, ४/७, दीर्घनिकाय ३/१/२, बुद्ध चर्या पृ० ४१६, २. योग दर्शन ४, ७

आचार्य उमास्वाति ने मन, वचन, काय के शुभ योग को पुण्य कहा है।[१] शुभ कर्म पुद्गल का नाम पुण्य हैं।[२]

अशुभ कर्मों से जितने अशुभ कर्म पुद्गल उत्पन्न होते है, उन अशुभ कर्म पुद्गलों को पाप कहा जाता गया है। [३]अच्छे कार्य करने में जो कर्म भाग नहीं लेता वह पाप कहलाता है।[४] पाप के तो कई कारण होते है लेकिन संक्षेप में पाप उत्पन्न होने के अट्ठारह कारण माने गये है। इन्हे पापस्थान कहा जाता है। अर्थात् इन कर्मों को करने से मनुष्य पाप का भागी होता है। इन निषिद्ध कर्मों के नाम इस प्रकार है।

१. हिंसा	१०. राग
२. झूठ	११. द्वेष
३. चोरी	१२. कलह
४. अब्रह्मचर्य	१३. अभ्याख्यान (झूठा आरोप)
५. परिग्रह	१४. पैशून्य (चुगली)
६. क्रोध	१५. परनिन्दा
७. मान	१६. रति - अरति (पाप धर्म में अरुचि)
८. माया	१७. मायामृषावाद (कपट सहित)
९. लोभ	१८. मिथ्या दर्शन।[५]

---

*१. शुभः पुण्यस्य। तत्वार्थ सूत्र ६/३

२. (क) पुण्यं शुभकर्म प्रकृतिलक्षणम्। सूत्रकृतांग शी० वृ० २,५,१६ पृ० १२७
(ख) मूलाचार वृत्ति - वसुनंद्याचार्य - ५ / ६
(ग) समवायांग अभय० १, पृ० ६
(घ) षड्दर्शन समुच्चय, गुण० वृ० ४७, पृ० १३७

३. (क) अशुभपरिणामों जीवस्य, तन्निमित्तः कर्मपरिणामः पुद्गलानां च पापम्। पंचास्तिकाय वृत्ति, अमृतचन्द्राचार्य १०८
(ख) पापम् अशुभ कर्म समवायांग अभय० १ पृ० ६
(ग) षड्दर्शन समुच्चय गुण० वृत्ति ४७, पृ० १३७

४. (क) पाति रक्षित आत्मानं शुभादिति पापम्।
(ख) पात्यवति रक्षति आत्मानं कल्याणादिति पापम् । तत्वार्थ श्रुतसागरीया वृत्ति, ६ / ३*

५. जैन दर्शन : स्वरूप और विश्लेष, देवेन्द्र मुनि शास्त्री पृ० १९४

आध्यात्मिक दृष्टि से पुण्य व पाप ये दोनों ही बन्धन है। इनसे मनुष्य मुक्ति नहीं पा सकता। मीमांसकों ने पुण्य व पाप में पुण्य साधना पर अधिक जोर दिया है। उन्होंने पुण्य को जीवन का एक आवश्यक अंग स्वीकार किया है। किन्तु जैन दार्शनिको ने पुण्य को अपेक्षा दृष्टि से हेय, ज्ञेय व उपादेय तीनों ही माना है। निश्चय नय की दृष्टि से पुण्य - पाप दोनों हेय हैं। पुण्य सुहावना है और पाप असुहावना।

व्यवहारिक दृष्टि से पाप की अपेक्षा पुण्य सर्वाधिक श्रेष्ठ होता है। पाप से नरक आदि दारुण वेदनाएं प्राप्त होती है। संसार में निन्दा, अपयश, कष्ट इत्यादि प्राप्त होते है। जब कि पुण्य कर्म से स्वर्ग व सुख की उपलब्धता होती है। इस प्रकार से मनुष्य के जीवन में पाप की अपेक्षा पुण्य अधिक सर्वश्रेष्ठ है। मनुष्य इस जीवन में पुण्य करना चाहता है लेकिन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से वह पाप कर बैठता है। उसके न चाहते हुए भी वह कार्य सम्पन्न हो जाता है।

पुण्य के प्रकार

जैनाचार्यों ने पुण्य के दो प्रकार बतायें हैं जो निम्न हैं -

१. पुण्यानुबन्धी पुण्य

२. पापानुबन्धी पुण्य[१]

पुण्यानुबन्धी पुण्य - जिस पुण्य कर्म के करने से पुण्य कर्म की परम्परा कायम रहे, अर्थात् पुण्य को भोगते हुए नवीन पुंण्य का बन्ध हो उसे पुण्याबन्धी पुण्य कहते है। उदाहरणार्थ - एक व्यक्ति जो सम्पूर्ण प्रकार के सुख साधन को प्राप्त किया हो, फिर भी वह किसी मोह के द्वारा उसके वशीभूत होकर अपने हित के उद्देश्य के लिए मुक्ति की अभिलाषा करता है। अर्थात् पूर्व पुण्य का उपभोग करते हुए एक नवीन पुण्य का बन्ध करता है। वह पुण्यानुबन्धी पुण्य कहलाता है।

पापानुबन्धी पुण्य - जिस पुण्य से नवीन पाप बन्ध का कारण हो वह पापानुबन्धी पुण्य कहलाता है। अर्थात् सम्पूर्ण प्रकार के सुखोपभोग

---

*१. उत्तराध्ययन सूत्र, २८।१४

के साधन प्राप्त हुए भी मोह की प्रबलता के कारण असदाचारी बन कर पाप करना पापानुबन्धी पुण्य कहलाता है।

पाप के प्रकार :

जैनाचार्यों ने पाप के दो प्रकार बताये है जो निम्न है।

१. पापानुबन्धी पाप

२. पुण्यानुबन्धी पाप [१]

पापानुबन्धी पाप- जिस पाप को भोगते हुए नया पाप बद्यता है। वह पापानुबन्धी पाप कहलाता है। जैसे - कसाई, धीवर आदि ने पूर्व में पाप किया, जिसके कारण वह अनेक कष्ट पा रहा है। और इस पाप को भोगते हुए नवीन पापों का बन्ध कर रहा हो। अतः वह पापानुबन्धी पाप कहलाता है।

पुण्यानुबन्धी पाप - जिस पाप को भोगते समय नवीन पुण्योपार्जन होता है उसे पुण्यानुबन्धी पाप कहते है। जो जीव पूर्व में किये हुए पाप के कारण इस समय दरिद्रता या दुःख भोग रहा है किन्तु अच्छे लोगों के सत्संग आदि के कारण विवेक पूर्वक कार्य करके पुण्योपार्जन करते है। वे पुण्यानुबन्धी पाप के भागी होते है।

---

१. वही*

मलयासुन्दरी चरित्र

इस समय लोभाकर का पुत्र गुणवर्मा किसी कार्य के लिये कई दिनों से शहर से बाहर किसी गाँव को गया हुआ था। किसी मनुष्य के द्वारा इस बात को सुन कर वह शीघ्र ही घर आया। अपने पिता व चचा की ऐसी अधम दशा देखकर उसे बड़ा दुःख हुआ। गुणवर्मा उदार दिल, निर्लोभी और विचारशील युवक था। लोगों में होने वाली इस कृति की निन्दा उससे सहन न हो सकी। दूसरी तरफ अपने बुजुर्गों को निरन्तर दुःखी अवस्था में देखना यह भी उसे उचित न लगा। उसने तुरन्त ही अनेक मंत्रवादियों को बुलवाया और अपने बुजुर्गों का दुःख दूर करने के लिये खूब द्रव्य व्यय करना शुरू किया। अनेक तरह के उपाय किये गये, अनेक मांत्रिक तांत्रिकों ने अपने प्रयोग किये परन्तु अपने आप से किये हुये कर्म का कटुफल भोगे बगैर किस तरह मुक्ति हो सकती थी? पानी पर किये हुये प्रहार की माफक उन लोगों के किये हुए अनेक उपाय सब निष्फल गये। इतना ही नहीं किन्तु धीरे -२ उनका कंष्ट और भी बढ़ता गया। गुणवर्मा निराश हो गया। उसे कोई उपाय सफल होना मालूम न दिया।

विदेशी युवक की खोज

धन धान्यसे परिपूर्ण और मनुष्योंसे शून्य एक शहर के दरवाजे पर खड़ा हुआ एक युवक पुरूष विचार कर रहा है अब मैं कहाँ जाऊँ? उस अनजान पुरुष की किस तरह शोध करूँ? मैं खुद तो उसे पहचानता ही नहीं। उसे पहचानने वाला साथमें आया हुआ मनुष्य भी बीमार होनेके कारण वापिस चला गया। मैं तो उसका नाम ठाम या आकृति वगैरह कुछ भी नहीं जानता। अब तो अनेक शहर गांव आश्रय वगैरह घूम - घूम

कर थक गया। परन्तु खोये हुये धन के समान उस मनुष्य का कुछ भी पता न लगा। अगर वह कहीं नजदीक में ही हो और मुझे मिल भी जाय तो पहले देखे वगैर मैं उसे किस तरह पहचान सकूंगा? इत्यादि विचारों और रास्ते के परिश्रम से खिन्न हुआ वह युवक विश्रांति के लिये इस शून्य शहरमें प्रवेश करता है। आगे चलने पर उसे एक अपने सन्मुख आता हुआ सुन्दर आकृतिवाला पुरुष दिखायी पड़ा।

उस पुरुष को शहर में प्रवेश करने वाले उस थके हुए युवक को देखकर शहर में से आता हुआ पुरुष बोल उठा - हे वीर पुरुष आप कौन हैं? और कहाँ से आये हैं! यह सुन कर शहर में प्रवेश करने वाले युवकने उत्तर दिया, 'भाई मैं एक पथिक हूँ' देशाटन करते हुये रास्ते के परिश्रम से थक कर विश्रांति के लिये इस शहर में प्रवेश कर रहा हूँ।

"आप स्वयं कौन हैं! इस शहरमें आप अकेले ही क्यों दिखायी पड़ते हैं। यह शहर ऋद्धि सिद्धि से पूर्ण होने पर भी मनुष्यों से शून्य क्यों हैं? और इस नगर का नाम क्या है?

पथिक के ऐसे विनय भरे वचन सुन कर खुशी हो वह पुरुष कहने लगा 'हे भद्र? यह कुशवर्धन नामक शहर हैं। वीरपुरुषों में अग्रसर शूर नामक राजा यहाँ राज्य करता था। उसके जयचंद्र और विजयचन्द्र नाम के हम दो पुत्र थे। आयुष्य पूर्ण होनेपर मेरे पिता इस तूफानी दुनिया को त्याग कर देवलोक में जा बसे। सचमुच ही संसार में तमाम वस्तु नाशवान हैं। देहधारी जीवों का चाहे जितना लंबा आयुष्य हो तथापि उसका अन्त अवश्य है। मेरे पिता की मृत्युके बाद मेरा बड़ा भाई जयचन्द्र राज्यासनपर आरुढ़ हुआ। उसने मुझे राज्य का हिस्सा न दिया, इससे मैं अपना अपमान समझकर इस राजधानी को छोड़ कर अन्यत्र चला गया। चंद्रावती नगरी में पहुँचा वहाँ जाकर उस नगरीके बाहर उद्यानमें एक विद्यासिद्ध पुरुष को मैने देखा, परंतु वह सिद्ध पुरुष अतिसार रोगसे ऐसा दुख भोग रहा था कि जिससे न तो उससे चला ही जाता था न बोला जाता था। उसकी ऐसी दशा देखकर मेरे हृदय में दया का संचार हुआ। दुःखी मनुष्यों को देखकर जिसके हृदय में निःस्वार्थ दयाका संचार नहीं होता वह मनुष्य, मनुष्य, कहलाने के योग्य भी नहीं रहता मनुष्य जब खुद

दुखी होता है तब वह दुख से मुक्त होने के लिये दूसरे मनुष्यों की सहायता माँगता है, ऐसी दुखी अवस्था में यदि उसको थोड़ी भी सहायता दें तो वह बहुत खुशी होता है। इस तरह का स्वयं अनुभव होने पर भी यदि वह मनुष्य दुखी अवस्था में पड़े हुए दूसरे मनुष्य को सहायता न दे तो उस विचार शून्य मनुष्य को सचमुच ही नरपशु समझना चाहिए। ऐसे मनुष्य पृथ्वी पर भारभूत होते हैं।

जहाँ पर अपने स्वार्थपन की वृत्तियाँ होती हैं वहाँ पर परमार्थ वृत्तियाँ और धार्मिक भावनायें टिक नहीं सकतीं। ज्ञानी पुरुष पुकार कर कहते हैं कि अगर तुम्हें सुखी होना है तो दूसरों को निस्वार्थ बुद्धि से सुखी करो। जहाँ पर स्वार्थ सिद्धि होने की आशा होती है वहाँ सहाय करने वाले अधम मनुष्यों की भी दुनियाँ में कमी नहीं है। परन्तु अपने स्वार्थ की आशा न रखकर बल्कि जिससे जान पहचान तक भी न हो ऐसे दुःखी मनुष्यों को सहाय देकर सुखी करने वाले वीर पुरुष इस संसार में विरले ही होते हैं।

किसी भी वस्तु की इच्छा न रख कर ह्रदय में संचारित दयाकी प्रेरणासे मैने उस सिद्ध पुरुष की ऐसी सेवा सुश्रुषा और उपचार से सहाय की, जिससे वह थोड़े ही दिनों में सर्वथा निरोगी हो गया। आरोग्य प्राप्त करके उस सिद्ध पुरुष ने मेरा नाम ठाम पूछा। संक्षेप से मैने अपने ऊपर बीती हुई सब घटना कह सुनाई।

प्रसन्न होकर उस सिद्ध पुरुष ने मुझे पाठ - सिद्ध बोलने मात्र से अपने गुणको प्रकट करने वाली एक स्तंभनकारी और दूसरी वशी - करण वशकरने वाली दो विद्यायें दीं। इसके उपरान्त एक रसका भरा हुआ तूम्बा देकर उसने कहा कि भद्र! इस तूम्बे का तुम अच्छी तरह से रक्षण करना। यह रस मैंने बड़े कष्ट से प्राप्त किया है। यह लोहभेदक रस है जिसके एक बिन्दुके स्पर्श मात्रसे लोहे का सोना बन जाता है।

मेरी दुःखी अवस्था में तूने बड़ी सहाय की है। तू मुझे बिलकुल नहीं पहचानता, एवं मेरी तरफ से तुझे किसी तरह की आशा भी न थी क्यों कि धनवान के समान मेरे पास वैसा कोई भी आडम्बर नहीं था, इस लिए तूने निस्वार्थ बुद्धि से मेरी सहायता की है, इसीसे तेरी उत्तमता और

सत्कुलीनता का पता लगता है। मैं जो तुझे प्रत्युपकार में ये दो विद्यायें और एक सुवर्ण सिद्धरस का तूम्बा दे रहा हूँ इनके द्वारा तू एक महान् राज्यसंपदा प्राप्त कर सकेगा। परमात्मा तेरे श्रेष्ट कर्तव्यों का तुझे बदला दें, और तेरे मनोरथों को सिद्ध करें इत्यादि शिक्षा और आशीर्वाद देकर वह सिद्ध पुरुष गिरनार पहाड़की तरफ चला गया।

सिद्ध पुरुष ने अपने ऊपर उपकार करने वाले मनुष्य पर अपनी शक्ति के अनुसार प्रत्युपकार किया। किये हुये उपकारों को भूल जाने वाले, शक्ति होने पर भी और अवसर मिलने पर भी, प्रत्युपकार न करने वाले मनुष्य, धिक्कार के पात्र हैं। इस प्रकार के कृतघ्न मनुष्य, किये हुए उपकार को भले ही भूल जायँ, बदला न दें, तथापि परिणामकी विशुद्धि पूर्वक निस्वार्थ बुद्धि से किया हुआ परोपकार उसे अपने मीठे फल अवश्य चखाता है।

सिद्ध पुरुष की शिक्षा और आशीर्वाद को स्वीकार कर मैं चन्द्रावती नगरी में गया। वहाँ घूमते हुए मैं लोभाकर और लोभानन्दी नामक व्यांपारियों की दुकान पर पहुँचा। व्यापार निपुण एवं कपट प्रपंच में भी निपुण, उन बनियों ने मेरा बहुत ही आदर सत्कार किया, उनकी दिखलाई हुई शिष्टताके कारण मैं प्रसन्न होकर उनके स्वाधीन हो गया। अतः विश्वास पाकर उस रस के तूम्बे को सुरक्षित रखने के लिये उन्हें सौंप कर मैं कुछ दिन के लिए आगे दूसरे गाँव चला गया।

कितने दिन लक्ष्मीपुर में रह कर माता से मिलने की उत्कंठा से मैं स्वदेश जाने को पीछा लौटा। रास्ते में चन्द्रावती में रसका तूम्बा लेने के लिए सेठ की दुकान पर गया, परन्तु न जाने किस तरह मेरे तूम्बे में रहे हुए लोह भेधक रस का लोभाकर को पता लगने से उसने उसे छिपा लिया और मुझे असत्य उत्तर दिया। बहुत कुछ समझाने बुझाने पर भी उन लोभान्ध व्यापारियों ने मेरा रस का तूम्बा मुझे न दिया तब अन्त में कर्तव्य के अनुसार उन्हें शिक्षा देकर मैं वहाँ से अपने देश की तरफ चल दिया। जब मैं वहाँ से देश विदेश फिरता हुआ यहाँ आया तब धन - धान्य परिपूर्ण और प्रजा से शून्य अपने पिता की राजधानी को इस हालत में पाया कि जैसा तुम खुद इस वक्त देख रहे हो।

कुशवर्धनपुर का उजाड़ होना

पाठकों को याद होगा कि अपने पिता और चाचा को बन्धन मुक्त कराने के लिए गुणवर्मा के किए हुए अनेक उपाय निष्फल गये। उस वक्त निराश होकर वह महान् चिन्ता में पड़ा था। अन्त में विचार करने से उसने यह निर्णय किया कि जिसके द्वारा यह दुःखाग्नि प्रगट हुई है उसी से शान्त भी होगी। अब उसी की शरण लिए बिना किसी तरह छुटकारा नहीं होगा।

यह निश्चय कर वह उस मनुष्य को पहचानने वाले एक अपने नौकर को साथ लेकर उस युवक की खोज में चन्द्रावती से निकल पड़ा था। उस सहायक को बीमार होने से रास्ते में ही छोड़ कर गुणवर्मा स्वयं ही थका हुआ आज इस शून्य नगर में आ पहुँचा है; और अपने बुजुर्गों के दुःख से दुखित होकर वह जिस मनुष्य की तलाश में फिरता था आज वही इस शून्य नगर में प्रवेश करते हुए सन्मुख आ मिला। पाठक यह भी समझ गये होंगे कि शून्य नगर में गुणवर्मा को मिलने वाला युवक, कुशवर्धनपुर के राजा शूरचन्द्र का विजयचन्द्र नामक कुमार है।

मेरे पिता और चाचा को स्तंभन करने वाला और जिसे ढूंढने के लिए मैं बन, उपवन, ग्राम और नगर भटकता फिरता हूँ, वह महाशय यह स्वयं ही है। यह जानकर गुणवर्मा को हिम्मत आई। जब तक विजयचन्द्र के संपूर्ण इतिहास से मै वाकिफ न होजाऊँ तब तक अपना उद्देश्य इसके सामने प्रगट करना सर्वथा उचित नही। यह निर्णय कर गुणवर्मा ने विजयचन्द्र से कहा भाई! पूरा वृतान्त सुनाओ; इस नगर के शून्य होने का क्या कारण है?

विजयचन्द्र बोला इस नगर को मनुष्य से शून्य देख कर मुझे बड़ा दुःख हुआ! देव ऋद्धि समान शहर को आज शमशान सरीखा देखकर मैं सहसा स्तब्ध हो गया। अनेक प्रकार के संकल्प विकल्प उठे; परन्तु मन का समाधान न हुआ, अन्त में उत्साह और हिम्मत का सहारा लेकर मैंने अपने नगर के उजाड़ होने का कारण जानने का निर्णय किया। मैं नगर के चारों तरफ फिरने लगा, तथापि मुझे अपने सिवाय कोई मनुष्य नजर नहीं आया। फिर मैंने राज महल में प्रवेश किया, वहाँ मेरे बड़े भाई

जयचन्द्र की विजया नामक पत्नी मुझे अकेली नजर आई। मुझे देखते ही वह गद् गद् हो उठी और दौड़ी हुई मेरे सन्मुख चली आई। मुझे बैठने के लिए आसन दे कर वह अश्रु पूर्ण नेत्रों से रोने लगी। मैंने उसे धीरज दे कर नगर के उजाड़ होने का कारण पूछा।

विजया ने कहा - कुछ दिन पहले लाल वस्त्र धारक और एक एक मास के उपवास करने वाला यहाँ पर एक तपस्वी आया था। उसके तप के कारण शहर जनों की उस पर खूब भक्ति हो गई। आपके बड़े भाई ने एक दिन महीने के उपवास का पारना करने के लिए उसे निमंत्रण दिया, वह भी राज निमन्त्रण को स्वीकार कर महल में जीमने के लिए बैठाया गया और महाराज की आज्ञा से उसे भोजन करते समय मैं पंखा करने लगी। नवीन यौवन, सुन्दर रूप और श्रृंगारित मेंरे शरीर को देख कर उस पाखंडी तपस्वी का मन विचलित हो गया।

सचमुच ही तपस्वियों का मन भी सुरूपा स्त्रियों को देख कर चलाय मान हो जाता है, इसी कारण वीतराग देव ने योगी पुरुषों को स्त्रियों के सहवास से दूर रहने का फर्मान किया है। यद्यपि यह बात एकान्त नहीं है कि योगी और तपस्वियों का मन विचलित हो ही जाय, तथापि तत्व ज्ञान में पूर्णतया प्रवेश न करने वाले, अज्ञान कष्ट करने में ही आत्मकल्याण समझने वाले, या उस मार्ग में प्रथम ही आने वाले, अज्ञानी मनुष्यों के लिये ऐसा बनाव बनना सुलभ है। सत्ता में रहे हुये कितने एक कर्मों का ऐसा स्वभाव है कि निमित्त पाकर उदय में आजायँ, उस समय आत्म ज्ञान में प्रमादी और स्वरुप को भूले हुये अभ्यासी प्रबल कर्म के उदय को रोकने में असमर्थ हो, तन मन पर काबू न रखकर अकार्य में प्रवृत्त हो जाते हैं। इसी लिये आत्मस्वरूप प्रगट करने वाले मनुष्यों को ऐसे निमित्तों से दूर ही रहना चाहिए।

वह तपस्वी भोजन करते समय अपने आपको भूल गया। तपस्या से ग्लानि को प्राप्त हुए शरीर में काम देव ने प्रबल जोर किया, जिससे उसका दुर्बल शरीर भी सबल मालुम होने लगा। उस वक्त तो वह भोजन करके अपने स्थान पर चला गया, परन्तु रात्रि में कामान्ध हो कर वह तपस्वी गोधा के प्रयोग से मेरे महल में आ घुसा और मेरे पास आकर

विषय की याचना करने लगा। जब मैंने उसका कहना मंजूर नहीं किया तब मुझे साम; दाम, दंड और भेद नीति से डरा कर अपनी कार्य सिद्धि के लिये प्रेरित करने लगा। यह तपस्वी है इसी लिये इसे जान से मरवाना ठीक नहीं, यह समझ कर मैंने भी उसे साम, दाम, दंड, भेद, नीति द्वारा उसका मन स्थिर करने के लिये उसे बहुत कुछ समझाया, तथापि उसकी विषयान्धता का अनुराग जरा भी कम न हुआ। इस प्रकार हम दोनों में झगड़ा चल ही रहा था। इतने में ही शयन करने का समय हो जाने से आपके बड़े भाई महाराजा जयचन्द्र शयन गृह के दरवाजे पर आ पहुँचे और हम में होते हुए गुप्त वार्तालाप को उन्होंने द्वार के पास छिप कर सुन लिया। तपस्वी का बोल सुनते ही वे तत्काल क्रोधातुर हो गये और उस तपस्वी को सिपाहियों द्वारा बँधवा लिया।

प्रातः काल होते ही उसके दुष्कर्मों की वार्ता मनुष्यों में इस तरह पसर गई जैसे पानी में तेल का बिन्दु। उसके भक्तों में भी उसके प्रति तिरस्कार की भावनायें प्रबल हो उठीं और सब लोग उसकी निन्दा करने लगे। राजा ने उसे बुरी मृत्यु से यमराज का अतिथि बना दिया।

मरते समय कुछ शुभ भाव के परिणाम से तथा कुछ अज्ञान तपस्या के पुण्य, से वह तपस्वी मर कर राक्षस जाति के देवो में राक्षस रूप से पैदा हो गया। तपस्वी के भव में हुए अपने अपमान को याद करके राजा और प्रजा पर वैर भाव धारण कर वह यहाँ आया और बोला कि मैं वही तपस्वी हूँ जिसे राजा ने मरवा दिया था। मैं अपने वैर का बदला लूँगा, राजा और प्रजा को यों कहकर उसने आपके भाई को शीघ्र ही मार डाला और क्रम से प्रजा का संहार करने लगा। मृत्यु के भय से डर कर प्रजा अपनी जान बचाने के लिये जिधर को भागा गया उधर को पलायन कर गई और बहुत से मनुष्यों को इसने जान से मार डाला। बस इसी कारण समृद्धि से परिपूर्ण भी यह शहर मनुष्यों से शून्य हो गया।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 2471833

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 2378841
(R) 475-9712/2807

IN THE MEMORY OF PRABHAT NAHATA
PRADIP NAHATA
139/C/4 Anand Palit Road, Calcutta - 700 014
Phone : 2445839

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph. : (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 235 0623, (R) 239-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 236-2210

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SMT. ANGOORI DEVI SINGHI
'SINGHI PARK'
48/3 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 4642851/3511

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and Cables.
THENWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph. (O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile : 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street
2nd Floor, Calcutta -700 007
Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row
3rd Floor, Room no. 14
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Phone -Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile : 98 3102 8566
Resi : 355-9641/7196

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072
Ph : 215-1297, 236-4230/4240

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

In the memory of—
HARAKH CHAND NAHATA
Lalit, Pradeep, Dilip Nahata
21, Anand Lok, August Kranti Marg
New Delhi - 110 049
Ph: Resi. 625-1065/7653/6089
Off : 338-1735/5923

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta-69
Phone : 248-1533, 248-0046

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J. L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph·: Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

SIDDHA NIKETAN
Golden Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 229 5047, 9110

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

NARENDRA JAIN
Super Iron Foundry
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 651-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321
(Resi) 554 1289

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248 8576/0669/1242
Resi - 225 5514, 237 8208, 229 1783

DHARAM CHAND SARAOGI SMRITI NYAS
'Jain House'
8/1 Esplanade East
Calcutta - 700 069

IN THE MEMORY OF VIJAY SINGH BADER
Ratan Bader, Sudarsan Bader
26, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013, Phone :

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Phone : 239 6205/9727

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

FORT GLOSTER INDUSTRIES
31 Chowranghee Road, Calcutta - 700 016
Ph : 2462289 (Direct), 2498243/44/45
2490846,2454242, 2469551
Resi- 4553632/4399, Fax : (91) 033-2495665
Gram : gloscab, E-mail : gloster ho @ sms
sprintrgg ems V.S.N.L. Net in

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 235 7312, Shop : 230 1180
Resi : 241 6831

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 2355009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700007
Phone : Shop 230 0216, (R) - 2359657/9312

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 2387764, (R)6664541, 5309286

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta-700 007
Ph : Shop-242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta-700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta-700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D.C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta-700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta-700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta-700 007

LILY SUKHANI
7 Bright Appartment, Flat No- 7C
7 Bright Street, Calcutta - 700 019
Phone : 287 0448.

PARK PLACE HOTEL
'Singhi Villa'
49/2 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 475 9991/92/7632.

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Phone : 2352076, 2355701

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED
Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta-700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax : + 91-33-245-7591
Telex : 021-2101 GANG IN
Phone : 226-0881, 226-0883, 226-6283, 226-6953

Mill :

BANSBERIA
Dist : HOOGHLY
Pin-712 502
Phone : 6346441/6446442
Fax : 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

卐

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 569208/563276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi-110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsnl.net.in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी ।"

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.

Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P.O. Azimganj, Pin - 742122
Dist : Murshidabad
Phone : Code : 03483 No. : 53232
Cal. Phone No. : 033 2300432, 5213863

With Best Compliments...

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven design time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer from 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE : 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-2259484/2263236

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC-330
Vol. XXIII No. 9 TITTHAYARA December 1999
Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225